INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES AND INTERDISCIPLINARY STUDIES
(Peer-reviewed, Refereed, Indexed & Open Access Journal)
DOI : 03.2021-11278686 ISSN : 2582-8568 IMPACT FACTOR : 5.71 (SJIF 2021)

प्रतिभा पलायन और आत्मनिर्भर भारत

डा. मनोज कुमार सिंह
असिस्टेन्ट प्रोफेसर व विभागाध्यक्ष इतिहास
राज्य हरपाल सिंह महाविद्यालय,
सिंगरामऊ, जौनपुर।
Email : dr.manojsingh1975pbh@gmail.com

DOI No. 03.2021-11278686 **DOI Link ::** https://doi-ds.org/doilink/10.2021-37767426/IRJHIS2110008

Abstract:

प्रतिभा पलायन किसी भी देश की गंभीर समस्या है अपने सर्वश्रेष्ठ डाक्टरों, इंजीनियरों, वैज्ञानिकों को बेहतरीन जीवन एवं सुविधाओं के अभाव में फिसलने एवं दूसरे देशों में बस जाने से देश को अपूर्णनीय क्षति होती है। विकासशील देशों में यह प्रवृत्ति अधिक है। देश में रोजगार का अभाव, समान अवसर एवं आस्थिरता की वजह से प्रतिभाओं को अन्य देशों की ओर जाना पड़ता है। भारत से पश्चिमी देशों की ओर जाने वाली ऐसी प्रतिभाओं को रोकने के लिऐ आत्मनिर्भर भारत के तहत अनेक योजनाये आरम्भ की गई है जिससे जहॉ तक संभव हो रोजगार के अवसर उत्पन्न किये जायें, पेशेवरों को रोकने में मदद मिले और जो किसी काल में ऐसे अवसरों के अभाव की वजह से देश छोड दियो थे उन्हे पुनः देश वापस लाया जा सके, जिससे अर्थव्यवस्था को मदद मिले। यद्यपि विश्व के अनेक देश जैसे इग्लैंड, ईरान, चीन, नाइजीरिया जैसे देश भी इस समस्या से ग्रसित है परन्तु भारत में यह समस्या गंभीर है। आजादी के उपरान्त अनेक बड़े संस्थान खोले गये और इसमें प्रतिभाओं का तराशा गया किन्तु उन्होनें बेहतर सुविधाओं और पैकेजों की वजह से अपने देश को छोड़ दिया आज इस ओर सरकार ने ध्यान दिया है, प्रयास यही है कि इस भयंकर समस्या पर काबू किया जा सके और देश के युवा को देश में ही अवसर उपलब्ध कराया जाये। आज आतनिर्भर भारत योजना के तहत अनेक योजनायें भारत में आरंभ की गई है जिससे अपेक्षा है कि प्रतिभा पलायन रोकने में सहायता मिलेगी।

प्रस्तावना:

देश की स्वतंत्रता के बाद से हमें स्वतंत्र होकर कार्य करने की आजादी मिली। राजनीतिक गुलामी ने हर तरह के शोषण के उपरान्त देश की आर्थिक व्यवस्था को गर्त में डाल दिया था। हमें जीवन यापन के लिये कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ा रहा था। चारों तरफ गरीबी, अशिक्षा, भुखमरी से लड़ता भारत दशकों अपनी स्थिति को सुधारने की पुरजोर कोशिश करता रहा धीरे–धीरे आत्मनिर्भरता एवं समृद्धि के द्वारा सपन्नता

आने लगी। देश की युवा शक्ति अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर पहचान बनाने में जुट गयी और अपनी मेहनत से विश्व पोर्टल पर अपनी उपस्थिति दर्ज कराया किन्तु कई बार नीति–नियन्ताओं द्वारा ऐसी कई गलतियां हो जाती हैं कि देश का युवा देश छोड़ने के लिये मजबूर हो जाता है वह बेहतर भविष्य एवं अपनी क्षमताओं के भरपूर उपयोग के लिए दूसरे देशों की ओर उन्मुख हो जाते है। अवसरों की कमी एवं अपने बेहतर भविष्य के लिये दूसरों देशों की युवाओं के जाने की स्थिति को प्रतिभा पलायन कहते हैं। भारत एवं अन्य विकासशील देश इस बड़ी समस्या से जूझ रहे हैं।

प्रतिभा पलायन किसी भी देश की बड़ी बौद्धिक क्षति है एवं इसका असर देश की अर्थ व्यवस्था पर भी पड़ता है जो युवा अपनी क्षमता एवं बौद्धिकता को देश की प्रगति में लगा सकता है अचानक वह दूसरे देश चला जाता है इसमें भारी संख्या में वैज्ञानिक, डाक्टर, इंजीनियर एवं विशेषज्ञ शामिल लेते है। देश भारी धनराशि खर्च करके इन्हे प्रशिक्षित करता है और सेवा का अवसर आता है तब में प्रतिभायें देश त्याग देती है। प्रतिभा पलायन शब्द रायल सोसायटी द्वारा प्रतिपादित किया गया था। युरोप तथा अमेरिका के वैज्ञानिकों एवं पेशेवरों द्वारा अन्य स्थानों को पलायन के संदर्भ में यह शब्द गढ़ा गया था बाद में युनाइटेड किंगडम में भारतीयों के आगमन पर यह शब्द पहचान में आया प्रथम विश्व युद्ध के बाद जहॉ ब्रिटेन से प्रतिभाओं का पलायन हुआ वही विकाशशील देशों में यह और अधिक है। अपने जीवन स्तर को उच्च रखने के लिये, बेहतर सुविधाओं व उच्च तकनीकों की अभिलाषा में विकासशील देशों के युवा विकसित देशों की ओर पलायन करते है। सरदार ने कहा था कि देश की सेवा करने में जो आनंद है वह किसी अन्य चीज में नही है किन्तु धीमें विकास की वजह से प्रतिभायें अपने हितों को ध्यान में रखकर कार्य करती है वर्तमान समय आर्थिक है जिन देशों की आर्थिक व्यवस्था उत्तम नही है वहा पर पलायन की दर अधिक है। इस तरह पलायन के मुख्यतः निम्नकारण है।

1. कृषि आधारित अर्थव्यवस्थाओं में सभी लोगों को रोजगार के समुचित संसाधन उपलब्ध नहीं हो पाते है व क्षेत्रीय विकास भी असमान होता है।
2. इससे बेहतर उद्योग धंधों की ओर जाने के लिये कार्यशील व्यक्ति मजबूर होता है।
3. बेहतर सवस्थ्य व उत्तम जीवन शैली को ध्यान में रखकर बौद्धिक वर्ग विकसित देशों की ओर पलायन करते है।
4. कई बार राजनीतिक अस्थिरता, जलवायु परिवर्तन, धार्मिक कारण गृहयुद्ध जैसे अनेक कारण भी इसके लिये उत्तरदायी होते है।

इस तरह से प्रतिभा पलायन के अनेक कारक है इस प्रभावित देशों में, ब्रिटेन, भारत, युनान, ईरान, चीन, मलेशिया इत्यादि है।

इग्लैंड जैसे देश जो कि एवं उच्च वेतन या पैकेज के कारण आकर्षण का केन्द्र है वहॉ से भी पलायन के अनेक उदाहरण है कई पेशेवर उच्च क्षमतावान व्यक्ति दुनिया के अन्य देशों में नौकरी प्राप्त करने के लिये देश छोड़ चुके है। इसी तरह इस समस्या का सामना करने वाले देशों की सूची में युनान भी आ गया है, 2008 में ऋण की समस्या से ग्रस्त होने के बाद प्रतिभाओं के पलायन में वृद्धि हुई है। ग्रीस से जर्मनी की ओर पलायन अधिक है इसी तरह विश्व के अन्य देशों में ईरान भी शामिल है परन्तु वहॉ का पलायन धार्मिक तानाशाही और राजनीतिक उत्पीड़न की वजह से है। 4 मिलियन ईरानी दूसरे देशों में चले गये है। 15000 से

ज्यादा डिग्रीधारक हर वर्ष ईरान छोड देते है। मलेशिया भी ब्रेनड्रेन की समस्या से ग्रस्त है, सिंगापुर की ओर पलायन होता है। इन्ही देशों में नाइजीरिया भी शामिल है लगातार हो रहे गृह युद्ध से परेशान होकर व नौकरी की बेहतर संभावनाओं व उत्तर जीवन स्तर से प्रेरित होकर बड़ी संख्या में नाइजीरियन युवा अमेरिका की ओर जा रहा है। चीन, मैक्सिको जैसे देश भी इस पलायन से ग्रस्त है।

विश्व के अन्य देशों की तरह से भारत भी इस गंभीर बीमारी की चपेट में है आजादी के बाद अनेक उच्च स्तर के संस्थानों IIT_S, IIM_S, AIIMS की स्थापना भारत में की गई जो कि गर्व का विषय है किन्तु भारी सब्सिडी के उपरांत इनमें शिक्षित भारतीयों का विकसित देशों की ओर पलायन आरंभ हो गया। हम अपने देश का धन इन उच्च शिक्षण संस्थानों पर खर्च करते रहे और उससे निकली प्रतिभायें देश को छोडकर विदेशों की ओर जाती रही। हिन्दुस्तान टाइम्स 02 अक्टूबर 2015 की रिपोर्ट के अनुसार 10 वर्षो से भारत से अमेरिका को जाने वाली बौद्धिक संपदा में 85 प्रतिशत वृद्धि हुई है। यह समाचार नेशनल सांइस फांउडेशन की रिपोर्ट पर आधारित था। इसी फांउडेशन की रिपोर्ट के अनुसार अमेरिका की ओर आने वाले सभी प्रतिभाओं में 57 प्रतिशत ऐशिया से थे। लगभग 9.50.000 भारतीयों की संख्या आंकी गयी थी जो कि अमेरिका गये थे। 2003 से 2013 के बीच अमेरिका गई इन प्रतिभाओं से केवल 5 प्रतिशत वापस आये बाकी वहीं बस गये। इस समयावधि में 85 प्रतिशत ब्रेनड्रेन भारत से अमेरिका में हुई। मई 2013 में अर्न्तराष्ट्रीय जनरल आफ मानबिकी एवं समाजिक विज्ञान की रिपोर्ट के अनुसार भारत से उच्च शिक्षा, रोजगार अफसर की अनुपलब्धता की वजह से अमेरिका व युरोप की तरफ पलायन अधिक हो रहा है। जिसकी वजह से भारतीय अर्थव्यवस्था को प्रतिवर्ष 2 मिलियन डालर से अधिक की क्षति हो रही है। विकासशील देशों में भारत को अपने अनेक वैज्ञानिक इंजीनियर डाक्टर सूचना विशेषज्ञ सहित अन्य पेशेवरों को खोना पड़ा है। अभी तक पांच ऐसी प्रतिभाये है जो भारतीय मूल्य के है परन्तु जब उन्हे नोवेल पुरस्कार मिला वब वे भारत के नामरिक नहीं थे। आप हरगोविन्द खुराना अमृसेन, सव्रमण्यम् चन्द्रशेखर, वी.एस. नायपाल। अब सभी लोग अगर भारतमें होते तो इतनी ऊंचाईयाँ छू पाते कि नहीं इस पर संदेह है। उस समय विदेशों में रहने वाली भारतीय जनसंख्या 2.5 करोड़ से ऊपर है प्रतिभा पलायन से कितना नुकसान है कि हम पांचों प्रतिभाओं को भारतीय मूल का कहकर गर्व कर सकते है किंतु वे वास्तव में भारतीय नागरिक नही है। इसी तरह भारतीय प्रबंधन संस्थान जैसे उच्च कोटि की संस्थाये हजारों योग्य युवा पैदा करती है परन्तु हम कितना उनका उपयोग कर पाते है। इसका परिणाम यह होता है कि जिन प्रतिभाओं को तैयार करते समय देश सोचता है कि वे देश के विकास में योगदान देंगे वे सभी बाद में अन्य देशों के विकास में लग जाते है इससे मातृदेशों को भयंकर हानि होती है।

भारत की इन प्रतिभाओं को देश में ही रोजगार देने की दिशा में 12 मई 2020 को प्रधानमंत्री जी ने आत्मनिर्भर भारत के तहत 20 लाख करोड़ रूपये की योजना प्रस्तुत की। इस काल में कोरोना प्रगति पर था विश्व के सभी देशों की अर्थव्यवस्था घाटे में थी, भारत भी इसकी चपेट में था। ऐसे में सीधे लोगों की मदद के बजाय यह योजना अपरोक्ष रूप से उपस्थियो के लिये प्रस्तुत की गई जिससे रोजगार के साधन व अवसर अत्पन्न किये जा सकें इसे आपदा के वक्त अवसर भी कहा जा सकता है। यह धन भारत के सकल घरेलू उत्पाद ;ळक्च्द्ध का 10 प्रतिशत था। आत्मनिर्भर भारत अभियान के वहत 16 योजनाओं की घोषणा की गई इसमें

वैश्विक सहायता के साथ अपने संसाधनों के प्रयोग की बात कही गई थी। प्रथम चरण में चिकित्सा, वस्त्र, इलेक्ट्रनिक्स, प्लास्टिक खिलौने जैसे को प्रोत्साहित किया जाना था व दूसरे चरण में फार्मा, स्टील जैसे क्षेत्र शामिल थे। इस पैकेज का हिस्सा कर्य के रूप में दिया गया था। सरकार बैकों को ऋण वापसी की गारंटी देगी। भंयकर आपदा के समय में भारत ही ऐसा देश था जिसने ऐसा साहस किया आत्मनिर्भर भारत के पांच स्तंभ जिससे यह अपेक्षा की गई कि भारत की प्रतिभायें जो कभी अवसर की कमी से पलायन कर गई उनका स्वागत है। 4 जुलाई 2020 को ऐप के मामले में आत्मनिर्भर बनने के लिये ऐप इनोवेशन चैलेंज लांच किया गया। ऐप इनोवेशन चैलेंज का मूलमंत्र है भारत में भारत के लिये व विश्व के लिये निर्माण हो। इन घोषणाओं में एम.एस.एम.ई. के 20.000 करोड़ का ऋण है व ग्लोबल टेंडर की सीमा बढ़ाकर 200 करोड़ किया गया है। इस अभियान के तहत हर तरह के उद्योगों को विकसित करने का लक्ष्य रखा गया। स्टार्टअप्स, मेकइन इंडिया जैसे कार्यक्रम से रोजगार पर जोर दिया गया।

कोरोना वायरस के दौरान विश्वव्यापी आपदा में लाखों लोगों के वापस स्वदेश आना पड़ा विश्व बैंक की रिपोर्ट के अनुसार 2019 में भारतीयों द्वारा भेजी जानी वाली राशि 83 अरब डालर थे परन्तु इसमें 2020 में 24 फीसदी की गिरावट का अनुमान है विदेशों में काम करने वाले भारतीयों द्वारा भेजी गई यह राशि अर्थव्यवस्था की करीब 3 प्रतिशत थी। लगभग 85 लाख लोग खाड़ी देशों में कार्यरत है हो सकता है कि उन्हें भी इस समय देश वापस आना पडे और रोजगार की जरूरत हो ऐसे में अगर सर्वाधिक प्रभावित देशों से लोग भारत वापस आते है और उन्हे रोजगार देने में सरकारें सफल हो जाती है। तो प्रवासियों का विश्वास देश में बढ़ेगा व अधिकांश प्रतिभायें भारत में ही रोजगार की तलाश करेंगी। चीन ने अपनी शोध में वजट बढ़ाकर अपनी पलायन की समस्या पर फाश्पा किया है। जब तक भारत भौतिक शोध व अनुसंधान पर बढ़ावा नही देगा प्रतिभाओं को रोकना कठिन होगा। जापान फोरम फार स्ट्रैटेजिक स्टडीज, टोक्यो में शोध अध्येता बोरा के अनुसार अगर भारत आई टी सेक्टर, इन्फ्रास्टक्चर, निर्माण क्षेत्रों में पर्याप्त अक्सर उपलब्ध करा देता है तो अपने अध्ययन के अनुसार केन्द्र सरकार की ओर से सुरू की गई रामानुजम योजना व बज्र जैसी योजनाओं से अनेक भारतीय शिक्षक व वैज्ञानिक वापस भारत लौट रहे है। अमेरिका जैसे देशों में एक बडा हिस्सा भारत से गये प्रतिभावानों का है अमेरिका की अर्थव्यवस्था में भारतीयों ने बड़ा योगदान दिया है, बहुत से हमारे छात्र थे ऐसे है जो अमेरिका सहित अन्य विकसित देशों की ओर गये और बेहतर सुविधायें, वेतन इत्यादि के कारण वही बस गये है। हरगोविंद खुराना विदेश से शिक्षा प्राप्त करके भारत आये लेकिन हम उन्हे काम नही दे पाये और वे वापस यू0एस0 चले गये। अगर इन्हे आज वापस लाना है तो आत्मनिर्भर भारत योजना में इन्हे शामिल करके लाभ प्राप्त किया जा सकता है इसके अतिरिक्त अन्य कई उपायों से भी इन्हे वापस भारतीय अर्थव्यवस्था में जोड़ा जा सकता है जैसे

1. कई भारतीय प्रतिभाये ऐसी है जो भारतीय सेवाओं में आरक्षण की वजह से देश छोड़ने के लिये मजबूर है, अगर आरक्षण को आर्थिक आधार पर दिया जाये तो बहुत से प्रतिभाये भारत में रूक सकती है।
2. सेवाओं में जाति, धर्म, भाई–भतीजा वाद, क्षेत्रवाद इत्यादि बीमारियों को खत्म कर दिया जाये जिससे व्यक्ति योग्यता के आधार में चुना जाये इससे युवाओं का विश्वास व्यवस्था में बढ़ेगा।

3. स्टार्टअप्स, स्वरोजगार के तहत सरकार को अत्यधिक ध्यान देने की जरूरत है। सरकार का यह विचार कि युवा नौकरी ना मांगे बल्कि आत्मनिर्भर बनकर दूसरों का नौकरी दें स्वागतयोग्य है किन्तु इस पर सरकार को अधिक ध्यान देने की जरूरत है।
4. डेयरी, पशुपालन, एग्रोफर्मिंग, फिशफार्मिंग आदि में अनुदान देकर युवाओं को बेहतर आय दी जा सकती है, बहुराष्ट्रीय कम्पनियों को ग्रामीण क्षेत्रों में उद्योग धंधों के लिये प्रोत्साहित किया जाना चाहियें, इससे उन इलाकों में भी रोजगार सृजन होगा।
5. कृषि कार्यो को आधुनिक बनाने की आवश्यकता है इसके लिये इंटरनेट का प्रयोग करके ग्रामीण इलाकों में रहने वाले प्रतिभावान व्यक्तियों को जानकारी देकर योगय बनाया जा सकता है।
6. मेक इन इंडिया के तहत अनेक मेगाफूड पार्को की स्थापना की गई है इसकी स्थापना का उद्देश्य किसानों फूड प्रोसेसर्स, खुदरा विक्रेताओं का ऐक साथ लाना है किन्तु बहुतायत किसानों को इन योजनाओं की जानकारी नही जब तक वे इन पार्कों से नही जुड़ेगे एवं प्रशिक्षित युवा नही जुड़ेगें तब तक इन पार्कों की उपयोगिता कुछ नही रहेगी।
7. जिन युवाओं पर देश की जनता का धन शिक्षा, रोजगार खर्च होता है उन्हे कम से कम 5 वर्ष देश में सेवा करने के लिये बाध्य किया जाये व इस दौरान उन्हे उचित अवसर उपलब्ध कराया जाये ताकि वाहर देशों में ना जायें। देश में रूकने का उत्तम आफर दिया जाये।
8. युवाओं में शिक्षण प्रशिक्षण देने से पहले उस तरह के क्षेत्रों का विकास भी करना चाहिये जिसमें इनकी आवश्यकता हो, अगर उस तरह के उद्योग नही है तो इनको शिक्षित करना बेकार है अतः इन्फ्रास्ट्रक्चर पर अधिक जोर देना होगा इसके लिये आत्मनिर्भर भारत मील का पत्थर सावित होगा।

प्रतिभा पलायन कम या ज्यादा अधिकांशतः विकासशील देशों की समस्या बनी हुई है, आर्कषक सुविधाये, उच्चवेतन इत्यादि की वजह से पलायन की चुनौती विद्यमान रहती है। युवा शिक्षा व रोजगार हेतु अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर भटक रहा है, अपने जीवन को उन्नत बनाने के लिये उसका यह कार्य स्वभाविक भी है, जब अपने जन्म स्थानों पर व्याप्त कर्मियों की वजह से उसकी प्रतिभा को ठेस लगती है तब वह पलायन को मजबूर हो जाता है। 1960 के बाद हमारे देश में भी इस समस्या ने विकराल रूप धारण कर लिया। हमने उच्चशिक्षण संस्थाये खूब बनाई परन्तु उनमें शिक्षित–प्रशिक्षित होने वाली प्रतिभायें क्या करेंगी सोच ही नही पाये और ना ही उन्हे उच्च कोटि का अवसर प्रदान कर पाये कि वे देश से बाहर ना जाये, लघु एवं कुटीर उद्योगो का विकास भी उस स्तर का नही हुआ कि उस तरफ भी युवा ध्यान देता क्योकि आर्थिक स्थिति देश की अच्छी नहीं थी। आज आत्मनिर्भर भारत ने युवाओं को वह मंत्र दिया है कि वे देश के लिये कुछ करें, स्वं के लिये रोजगार पैदा करें और दूसरी प्रतिभाओं को भी रोजगार देकर देश की समृद्धि में भागीदारी करें। आत्मनिर्भर भारत योजना भारत एवं उसके युवाओं को देश उन्नति में मील का पत्थर सावित होगी। इसकी सफलता के उपरांत अन्य युवा भी जो देश से बाहर चले गये है उन्हे वापस आने के लिये प्रोत्साहन मिलेगा। युवा देश का भवविष्य है हम उनके बारे में सोचें वे देश के बारे में सोचेंगें। अगर उनकी सारी आवश्यकताये देश में पूरी हो जायेंगी तो वे भी पलायन के बारे में नही सोचेंगें।

संदर्भ सूची :

1. Hindustan Times. 5 May 2013

2. Europe and Central Asia Economic UPDAE, world bond group 2019-10-09

3. प्रतिभा पलायन एक सोच–मोहन लाल गुप्ता

4. हिन्दुस्तान टाइम्स 20 अक्टूबर 2015

5. आत्मनिर्भर भारत My Government Site

6. Economics Times 14.05.2020 Atmnirbhar Bharat